Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 02, April-June, 2022, pp. 32-34

बेहतर अधिगम प्रतिफल के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य साइकोसोशल बॉन्डिंग

अरूण कुमार*

सार

बेहतर अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने हेतु आवश्यक है कि विद्यार्थी के मन में शिक्षक की स्वीकार्यता सहज हो। शिक्षक एवं विद्यार्थी परस्पर मिल कर एक लघू समाज का निर्माण करते है तथा इस लघू समाज के दोनों घटक (विद्यार्थी एवं शिक्षक) परस्पर एक दुसरे के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से भी स्वीकार्य होते है। अर्थात दोनों के मध्य एक विश्वास एवं स्वीकार्यता का बंध बन जाता है, जिसे मनो–सामाजिक बंध (च्लबीवै.वबपंस ठवदक) नाम दिया गया है। ऐसे मे शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देश/सूचना एवं आज्ञा को विद्यार्थी सहजता एवं पूर्ण मनोयोग से स्वीकार करता है और उस पर भरोसा करता है। इस तरह से शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य बना यह सहज स्वीकार्य को मनो'सामाजिक बंध विद्यार्थी को शिक्षण–अध्ययन प्रक्रिया हेतु सक्रिय करता है, जिसके शिक्षणचर्या में विद्यार्थी की भागीदारी बढ़ती है और अधिगम प्रतिफल बेहतर होता है। शोधार्थी द्वारा कक्षा तीन के विद्यार्थियों के दो बुद्धि लब्धि एवं सक्रियता स्तर वाले दो समान समूह बनाकर एक ही पाठ का अध्यापन एक समूह को नवीन शिक्षक द्वारा तथा दूसरे समूह को उस कक्षा में नियमित अध्यापन कराने वाले शिक्षक जिसके साथ विद्यार्थियों का मनो–सामाजिक बंध पूर्व से ही निर्मित है, द्वारा शिक्षण कराने पर परिणाम में आई भिन्नता से आधार पर प्रस्तावित अवधारणा की पुष्टि की है।

शब्द कुंजी : *मनो–सामाजिक बंध, अधिगम संप्राप्तियां, द्वि–सदस्यी समाज, सहज स्वीकार्यकता।*

प्रस्तावना

एक शिक्षक का कक्षा में आगमन विद्यार्थियों के लिए प्रसन्नता का कारण बन कर, कक्षा के वातावरण को खुशहाल बना देता है, वही दूसरी ओर एक अन्य शिक्षक जो कक्षा में जाने से पहले पूर्ण तैयारी करते है, खुद को संवारते है, पूर्व में पढ़ाए गये प्रकरण के प्रश्नों का सेट भी लाते है, परन्तु विद्यार्थियों में इन मेहनती शिक्षक के कक्षा आगमन पर अनजाना भय जाने क्यों रहता है ? पहले शिक्षक के समक्ष विद्यार्थियों की ओर से जिज्ञासा भरे प्रश्नों की झड़ी लग जाती है, उनके साथ विद्यार्थी गीत गाते, खिलखिलाते और बात करते हैं वहीं दूसरे शिक्षक की कक्षा में विद्यार्थी अभिव्यक्ति करते हुए भी आशंकित रहते है।

कक्षा के सहज वातावरण के लिए आवश्यक है सभी विद्यार्थियों में शिक्षक की सहज स्वीकार्यता। यह स्वीकार्यता तब ही सहज होगी, जब शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य स्वीकार्यता संबंधी दूरी न हो। अर्थात विद्यार्थी एवं शिक्षक मिलकर द्वि–सदस्यी समाज की अवधारणा को प्रतिबिम्बित करें,। दोनों मिल कर एक लघू समाज का निर्माण करें । शिक्षक द्वारा विद्यार्थी के लिए एवं विद्यार्थी द्वारा शिक्षक के लिए मानसिक रूप से यह सहज

* शोधार्थी, एस.के.डी विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान।

स्वीकार्यता, दोनों के मध्य मनोवैज्ञानिक समन्वय बनाती है। क्यों कि दोनो ने मिल कर एक लघू समाज बनाया है और दोनों एक–दूसरे को मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकारते है, ऐसे में उनके मध्य एक बंध (ठवदक) बनता है, जो मनो–सामाजिक बंध (ठवदक) की अवधारणा को अभिव्यक्त करता है। ऐसे मे शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देश/सूचना एवं आज्ञा को विद्यार्थी सहजता एवं पूर्ण मनोयोग से स्वीकार करता है और उस पर भरोसा करता है। इस तरह से शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य बना यह सहज स्वीकार्य को मनो'सामाजिक बंध विद्यार्थी को शिक्षण–अध्ययन प्रक्रिया हेतु सक्रिय करता है, जिसके शिक्षणचर्या में विद्यार्थी की भागीदारी बढ़ती है और अधिगम प्रतिफल बेहतर होता है।

जब शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य सहज स्वीकार्यता का, यह मनो–सामाजिक बंध (च्लबीव.ेवबपंस ठवदक) बन जाता है, जिससे शिक्षण–अध्ययन की प्रक्रिया में जटीलता समाप्त हो जाती है। अध्ययन आसान एवं अपनी सहज गति से आगे बढ़ता होता है तथा अधिगम की लब्धियां बेहतर प्रतिफल देने लगती है।

यद्यपि सीखने अथवा अधिगम की प्रक्रिया अनवरत होती है। शिशु जन्म के साथ ही सीखना प्रारंभ कर देता है। सामान्यतः विभिन्न प्राधिकारों और अर्जित होने वाले अनुभवों से उसके ज्ञान प्राप्ति एवं सीखने की सम्प्रति की प्रगति होती रहती है। परंतु औपचारिक शिक्षा अथवा शिक्षक की आवश्यकता, अर्जित किए जाने वाले ज्ञान को सही दिशा देने में, ज्ञान की उपयोगिता परिभाषित करने में तथा ज्ञान को सहज बनाने में अत्यावश्यक हो जाती है। सीखने की संक्रिया में सीखने वालों और सीखे जाने वाले के मध्य समन्वित संक्रिया होती है। सीखने की इस संक्रिया में दिशा एवं दशा तय करने वाला शिक्षक होता है।

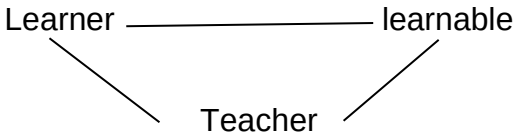

सीखने वाले की, सीखे जाने वाले तक की यात्रा में उसका पथ प्रदर्शक शिक्षक होता है। ऐसे में शिक्षार्थी व शिक्षक मध्य सहज मनो–सामाजिक बंध स्थापित होना आवश्यक होता है, जिससे कि शिक्षक प्राधिकारी के रूप में, विद्यार्थी के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य होगा। क्या सीखना है? क्यों सीखना है? और कैसे सीखना है? शिक्षार्थी के लिए इन प्रश्नों का एक–मेक प्रत्युत्तर है शिक्षक।

समाज का निर्माण एकाधिक व्यक्तियों से होता है। शिक्षक जब शिक्षार्थी के साथ किसी बंध द्वारा जुड़ जाता है, तो यह द्वैत एक समाज की इकाई का निर्माण करता है। जिस प्रकार समाज की इकाई परिवार होती है उसी प्रकार शिक्षार्थी एवं शिक्षक ज्ञान यात्रा केतु एक प्रारंभिक सामाजिक इकाई होते हैं। सहज स्वीकार्यता के लिए परिवार के सदस्यों के मध्य की मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्यता बंध होना आवश्यक होता है। बहुत सी बार ऐसा देखा गया है कि शिशु अपने माता के अधिक करीब होता है पिता से झिझक रखता है। इसके विपरीत शिशु ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता के साथ अधिक सहज होते हैं माता के साथ सामान्य रूप से व्यवहार करते हैं। यह जो स्वीकार्यता का बंध है, यह मनो– सामाजिक बंध (चेलबीवेवबपंस इवदकपदह) कहलाता है। सीखने के संप्रत्यय में भी कक्षा की कसौटी यही मनोसामाजिक बंध होता है। इसलिए औपचारिक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार्यता का, यह सहज स्वरूप होना चाहिए। शिक्षार्थी के लिए, शिक्षक को सहज एवं स्वाभाविक रूप से ज्ञान व्यक्तित्व एवं विश्वास के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से सामाजिक बंधन जिसे मनोसामाजिक बंध कहां गया है, बनाना आवश्यक होता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य बना यह बंधन उन्हें पारस्परिक रूप से एक दूसरे को सहज स्वीकार्य बनाता है जिससे अधिगम के प्रतिफल आसानी से प्राप्त होते हैं। शिक्षक की कही बात, शिक्षार्थी द्वारा सहज स्वीकार की जाती है साथ ही शिक्षार्थी की शंकाओं को अभिव्यक्ति प्राप्त होने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती है। शिक्षक शिक्षार्थी के हाव–भाव से ही, उनकी जिज्ञासाओं को सहज ही समझने की क्षमता रखने लगता है। इसलिए कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ कक्षा में प्रवेश करते ही शिक्षक को इस प्रकार की सहज बंध की स्थापना करनी चाहिए।

मनो–सामाजिक बंध से अधिगम संप्राप्तियों के सहसंबध को जानने के लिऐ कक्षा तीन के विद्यार्थियों को दो भागों में बांटा गया। दोनो भागों में समान विद्यार्थी रखें गये । कक्षा तीन के पर्यावरण विज्ञान का वह पाठ चयन किया गया, जिसे विद्यार्थी पहले से पढ़ चुके थे। दोनों ग्रुप में विद्यार्थियों का बंटवारा भी ऐसे किया गया कि दोनों में ग्रुप के विद्यार्थियों की औसत बुद्धिलब्धि स्तर एवं औसत कुशाग्रता स्तर समान हो।

दोनों ग्रुप से विद्यार्थियों को नियन्त्रित वतावरण में पर्यावरण विज्ञान का समान पाठ पठाया गया। ग्रुप एक को पढ़ानें वाली शिक्षिका उनकी कक्षा अध्यापक भी थी, जो गत दो वर्षों से उनके साथ थी और उन्हें पढ़ा रही थी। ग्रुप दो में जो शिक्षक भेजे गये, वे विद्यालय के विज्ञान शिक्षक हैं परन्तु कक्षा तीन में कभी नहीं गये। उनके चेहरे मोहरे से वे दिखने में बहुत गंभीर लगते है। दोनों ग्रुप में समान चैप्टर पढ़ाने के बाद उसी चेप्टर के बारे में एक छोटा सा पोस्ट टेस्ट शोधार्थी द्वारा लिया गया, जिसमें 10 लघुउत्तरात्मक प्रश्न सम्मिलित किए गये। टेस्ट के परिणाम चौंकाने वाले थै।

ग्रुप –1 कुल विद्यार्थी –15

सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	– 9
ऐसे विद्यार्थी जिनका केवल एक प्रश्न ही गलत हुआ था	– 3
ऐसे विद्यार्थी जिनके 6 से अधिक प्रश्न सही हुए थे	– 3
ऐसे विद्यार्थी जिनके 6 से कम प्रश्न सही हुए थे	– 0
ऐसे विद्यार्थी जिनका एक भी प्रश्न सही नहीं हुआ था	– 0

ग्रुप –2 कुल विद्यार्थी –15

सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	– 2
ऐसे विद्यार्थी जिनका केवल एक प्रश्न ही गलत हुआ था	– 2
ऐसे विद्यार्थी जिनके 6 से अधिक प्रश्न सही हुए थे	– 4
ऐसे विद्यार्थी जिनके 6 से कम प्रश्न सही हुए थे	– 7
ऐसे विद्यार्थी जिनका एक भी प्रश्न सही नहीं हुआ था	– 2

निष्कर्ष

यद्यपि उपर्युक्त शिक्षण एवं तदुपरांत टेस्ट नियन्त्रित वातावरण में हुआ था परन्तु ग्रुप 1 में शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया अधिक हो रही थी। विद्यार्थी सहजता से अभिव्यक्त कर रहे थे और टेस्ट के समय भी सहज रहे थे। दूसरी ओर ग्रुप 2 में विद्यार्थी नये शिक्षक को देख कर असहज परिलक्षित हो रहे थे। शिक्षण के मध्य भी शिक्षक के अथक प्रयास के बाद भी विद्यार्थियों द्वारा पाठ को बढ़ाने में कोई योगदान नहीं था। विद्यार्थी सहज रूप से अभिव्यक्ति नहीं कर रहे थे। उपर्युक्त का परिणाम पोस्ट टेस्ट में दिखाई दिया। जहां दोनों ग्रुप का स्तर समान था, पूर्व में पढाए गये पाठ का दोहरान ही किया गया था परन्तु शिक्षक की सहज स्वीकार्यता के अभाव में दोनों में मध्य बनने वाला मनो–सामाजिक बंधन स्थापित नहीं हुआ और असहजता के कारण ग्रुप 2 अपना स्वाभावित प्रदर्शन नहीं कर पाया।

उपर्युक्त शोध एवं शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य संबंध की अवधारणा से सह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सीखने की सहजता के लिए अन्य कारकों के अतिरिक्त शिक्षक की सहज स्वीकार्यता भी आवश्यक होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिक्षा मनोविज्ञान – डॉ. पी.डी पाठ्क
2. व्यवहारिक मनोविज्ञान – डॉ अशोक प्रताप सिंह
3. https://www.qualtrics.com/au/experience-management/research/determine-sample-size/
4. https://destinationinfinity.org/2011/05/08/selected-quotes-of-rabindranath-tagore-on-education/

♦❐♦